स्वामी विवेकानन्द की मानव निर्माण शिक्षा का समालोचनात्मक अध्ययन

शोधकर्ती
मधु बनी ट्रीजा
शिक्षा विभाग आईएफटीएम विश्वविद्यालय मुरादाबाद

निर्देशिका
डॉ. राजकुमारी सिंह
डीन एवं डायरेक्टर
शिक्षा विभाग आईएफटीएम विश्वविद्यालय मुरादाबाद

सारांश :स्वामी विवेकानन्द का जन्म कलकत्ता के एक बंगाली कायस्थ परिवार में 12 जनवरी 1863 को हुआ था। 31 मई 1893 को अमेरिका के शिकांगो में विश्व धर्म सम्मेलन में भारत के हिन्दू धर्म प्रतिनिधि के रूप में पहुंचे। स्वामी विवेकानन्द केवल संत ही नहीं बल्कि एक महान देशभक्त, वक्ता, विचारक, लेखक और मानव प्रेमी थे। देश की राजनीतिक चेतना के साथ-साथ सांस्कृतिक तथा धार्मिक भावनाओं के विकास में अपना बलिष्ठ कन्धा लगाने वालों में स्वामी विवेकानंद जी का नाम विशेष रूप से स्मरणीय है। स्वामी विवेकानंद जी ने जनता को अनुद्योग, आलस्य, अकर्मण्यता के स्थान पर उद्योग परिश्रम और कर्मण्यता का पाठ पढाया।

की- वर्ड्स – मेधावी, आध्यात्मिक, अनुभूति, पंचतत्व, घनिष्ठतम, लौकिक।

जीवन परिचय –

स्वामी विवेकानन्द का जन्म कलकत्ता के एक बंगाली कायस्थ परिवार में 12 जनवरी 1863 को हुआ था। इनके वास्तविक नाम नरेन्द्रनाथ दत्त था। इनके पिता विश्वनाथ दत्त कलकत्ता के उच्च न्यायलय में एटर्नी (वकील) थे। 25 वर्ष की आयु में उन्होंने अपना गृह त्याग कर संन्यास धारण कर लिया। परिवार के धार्मिक एवं आध्यात्मिक वातावरण के कारण नरेन्द्र के मन में बाल्यावस्था से ही धर्म कर्म पूजा पाठ एवं धार्मिक ग्रंथो में रुचि उत्पन्न हो गयी। 8 वर्ष की उम्र में नरेन्द्रनाथ ने ईश्वरचन्द विद्यासागर के मेट्रोपोलिटन संस्थान में प्रवेश लेकर दर्शन, धर्म, इतिहास, सामाजिक, विज्ञान, कला और साहित्य सहित विषय के साथ-साथ पाश्चात्य दर्शन का भी अध्ययन किया। नरेन्द्रनाथ एक अत्यन्त मेधावी छात्र था और अकस्मात ही पाठ को याद कर लिया करता था। उसने 1881 ई० में बी० ए० (प्रथम) की परीक्षा उत्तीर्ण कर 1884 ई० बी० ए० की डिग्री प्राप्त की। नरेन्द्र नाथ की धार्मिक प्रवृति को देखते हुए, इनके पिता विश्वनाथ दत्त ने इन्हें दक्षिणेश्वर में स्वामी रामकृष्ण परमहंस के पास ज्ञान प्राप्त करने के लिए भेज दिया था। नरेन्द्रनाथ स्वामी रामकृष्ण परमहंस के प्रश्नोत्तर से इतने प्रभावित हुए कि उन्होंने अपना गुरु बना लिया। स्वामी रामकृष्ण परमहंस के देहांत के बाद नरेन्द्र नाथ ने अपने गुरु की दी हुई शिक्षा का प्रचार पूरे विश्व में किया। 25 वर्ष की आयु में नरेन्द्रनाथ ने गेरुआ वस्त्र धारण कर पूरे भारतवर्ष की यात्रा की।

31 मई 1893 को अमेरिका के शिकांगो में विश्व धर्म सम्मेलन में भारत के हिन्दू धर्म प्रतिनिधि के रूप में पहुंचे। विश्व धर्म सम्मेलन में पराधीन भारतवासियों को हीन द्रष्टि से देखने के कारण स्वामी विवेकानन्द को अमेरिका के लोगों ने सम्मेलन में बोलने का मौका न दिया। धर्म महासभा का उद्घाटन सोमवार 11 सितम्बर 1893 ई० को हुआ, उसका आयोजन एक विशाल भवन में किया गया था। जिसका नाम हाल ऑफ़ कोलम्बस अन्य प्रतिनिधियों के साथ स्वामी जी सामने मंच पर बैठे प्रोफेसर राइट के द्वारा उन्होंने भाषण दिया। जिसे सुनकर वहां के लोगों पर गहरा प्रभाव पड़ा। स्वामी विवेकानन्द केवल संत ही नहीं बल्कि एक महान देशभक्त, वक्ता, विचारक, लेखक और मानव प्रेमी थे।
भारतवर्ष में अपने समस्त जीवन काल में आध्यात्मिक ज्ञान व प्रचार के कार्यो में लगे रहे। इनकी मृत्यु 4 जुलाई 1902 अल्प आयु में हो गयी।

स्वामी विवेकानन्द की मानव निर्माण की शिक्षा –

मानव में जड़ तत्व भी है। उसका शरीर पंच तत्वों से मिलकर बना है। उसका सम्बन्ध भौतिकवाद अर्थात जगत से है जो मनुष्य चारों ओर है। आत्मप्रज्ञा का सम्बन्ध अध्यात्मवाद से है अतः इस दार्शनिक शब्दावली में आध्यात्मिक सत्य कहते है दोनों प्रकार के सत्यों और ज्ञानों का जीवन में घनिष्टतम सम्बन्ध है। स्वामीजी के अनुसार मानव - मानव के बीच एक अलौकिक समन्वय होता है। प्रत्येक मानव में ब्रह्म विद्यमान है। अतः ऐसी स्थिति में सम्पूर्ण विश्व में ब्रह्मत्व (एकता) की भावना निहित है। एक छोटी आत्मा मानव में है तो एक विश्वात्म सम्पूर्ण संसार में व्याप्त है। इसी से विश्वैकता सिद्ध होती है।

बोस्टन के ट्वेन्टीएथ सेन्चुरी क्लब में स्वामीजी द्वारा किया गया भाषण का एक अंश इस प्रकार वेदान्त के सार एवं मानव की ओर इंगित करता है - मैं यहां एक भारतीय दर्शन का, जिसे वेदान्त कहते है, प्रतिनिधित्य करने आया था। यह दर्शन अत्यन्त प्राचीन है। यह दर्शन उस विशाल

पुरातन साहित्य से उदागत हुआ है, जिस वेदों के नाम से पुकारते है। यह वेदान्त दर्शन मानों शताब्दियों तक संग्रहित और चयन किये गये। उस विशाल साहित्य के अंतर्गत सभी विचारधाराओं, अनुभवों तथा विवेचनों का सर्वोत्तम पुष्प है।

स्वामी विवेकानन्द जी के अनुसार, "शिक्षा का अर्थ है उस पूर्णता को व्यक्त करना जो सब मनुष्यों में पहले से विद्यमान है।" स्वामीजी के अनुसार," मैं ऐसा धर्म चाहता हूँ जो हर व्यक्ति को अन्न, वस्त्र और शिक्षा देने के साथ- साथ उन्हे अपने सभी दुख दूर करने की शक्ति प्रदान करे। हम भारतीय पहले हैं, मराठी, गुजराती, बंगाली, मद्रासी बाद में। सबको मिलकर इरा देश की दरिद्रता और अज्ञानता को दूर करना है।"

स्वामी विवेकानन्द जी मानव में ईश्वर पूर्णता पहले से ही विद्यमान मानते हैं। उनके अनुसार मनुष्य लौकिक और परलौकिक ज्ञान का पुंज है। अतः वे शिक्षा की परिभाषा इसी संदर्भ में प्रस्तुत करते हैं। उन्ही शब्दों में, "शिक्षा मनुष्य की अन्तर्निहित पूर्णता की अभिव्यक्ति है।"

व्यक्तित्व एवं राष्ट्र निर्माण पर विवेकानन्द के कालजयी विचार –

स्वामी विवेकानन्द एक व्यक्तित्व नहीं, एक बुनयादी है। ऐसी बुनयादी जिस पर भारत का विराट सांस्कृतिक महल खड़ा है। स्वामी विवेकानन्द जी ने अध्यात्म, वैश्विक मूल्यों, धर्म, चरित्र निर्माण शिक्षा एवं समाज को बहुत विस्तृत एवं गहरे आयामों से विश्लेषित किया है। भारत के ही नही, बल्कि विश्व के युवाओं के लिए अनेक विचार प्रासंगिक एवं अनुकरणीय हैं। उनके विचार आज के विखंडित एवं पथ भ्रष्ट समाज को जोड़ने के लिए रामबाण औषधि हैं। स्वामीजी ने शिक्षा को समाज की रीढ माना है। उनके अनुसार शिक्षा मनुष्यता की सम्पूर्णता का प्रदर्शन है। स्वामीजी ने कहा है कि जो शिक्षा मनुष्य में आत्मनिर्भरता एवं आत्मविश्वास न जगाए, उस शिक्षा का कोई औचित्य नहीं है। शिक्षा से व्यक्तित्व का निर्माण जीवन जीने कि दिशा एवं चरित्र निर्माण होना चहिए। धर्म की व्याख्या करते हुए स्वामीजी ने कहा है कि धर्म हमेशा मनुष्य को सद्विचार एवं आत्मा से जोड़ता है धर्म वह विचार एवं आचरण है, जो मनुष्य के अन्दर की पशुता को इंसानियत में और इंसानियत को देवत्व में बदलने की सामर्थ रखता है। उन्होंने सभी धर्मो का सार सत्य को बताया है एवं उसके आचरण की प्रेरणा दी है।

स्वामी विवेकानन्द जी ने युवाओं को चरित्र निर्माण की और प्रेरित करते हुए कहा है कि प्रत्येक मनुष्य जन्म से ही दैवीय गुणों से परिपूर्ण होता है। ये गुण सत्य, निष्ठा, समपर्ण, साहस एवं विश्वास से जाग्रत होते हैं। इनको अपने आचरण में लाने से व्यक्ति महान एवं चरित्रवान बन सकता है। मनुष्य को महान बनने के लिए संदेह, ईर्ष्या एवं द्वेष छोड़ना होगा। स्त्री विमर्श पर चर्चा करते हुए स्वामीजी ने कहा है कि आत्मा का कोई लिंग नही होता है अतः स्त्री एवं पुरुष को विभेद प्राकृतिक नही है, ये सिर्फ शरीर का विभेद है, जो ईश्वर द्वारा मान्य नहीं है। अतः समाज में स्त्रियों को वही सम्मान एवं स्थान मिलना चाहिए, जो पुरुष का है। हमें स्त्री एवं पुरुष के भेद को त्यागना होगा और प्रत्येक को मानव रूप में एकात्म दृष्टि से देखना होगा। स्वामी जी के अनुसार जब तक विश्व में महिलाओं की बेहतरी के लिए काम नहीं होगा तब तक विश्व का कल्याण संभव नहीं है। स्वामी जी के अनुसार युवा किसी भी देश की सबसे बहुमूल्य सम्पत्ति होती है। उन्होंने युवाओं को अनंत ऊर्जा का स्त्रोत बताया है। उन्होंने कहा है कि अगर युवाओं की अनंत ऊर्जा को सही दिशा प्रदान कर दी जाए तो राष्ट्र के विकास को नए आयाम मिल सकते हैं। स्वामी जी कहा करते थे कि जिसके जीवन व्यर्थ है लेकिन हमें एक बात का ध्यान रखना चाहिए कि हमारे लक्ष्य एवं कार्यों के पीछे शुभ उद्देश्य होना चाहिए।

स्वामी विवेकानन्द जी ने युवा वर्ग के चरित्र निर्माण के पाँच सूत्र दिए – आत्मविश्वास, आत्मनिर्भरता, आत्मज्ञान, आत्मसंयम और आत्मत्याग।

उपयुक्त पाँच तत्वों के अनुशीलन से व्यक्ति स्वयं के व्यक्तित्व तथा देश और समाज का पुनर्निर्माण कर सकता है। जिसने निश्चय कर लिया, उसके लिए केवल करना शेष रह जाता है। स्वामी जी ने कहा था कि जीवन में एक ही लक्ष्य साधो और दिन रात उस लक्ष्य के बारे में सोचो और फिर जुट जाओ उस लक्ष्य की प्राप्ति करने के लिए। हमें किसी भी परिस्थिति में अपने लक्ष्य से भटकना नहीं चाहिए। हिन्दू धर्म को स्वामी जी ने राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय मंच पर पहचान दी है। 19 वीं शताब्दी के अन्त तक विश्व भारत के बारे में बहुत कम जानता था। अंग्रेजों एवं ईसाईयों मिशनरियों ने भारत के बारे में कई भ्रांतियाँ फैलाई, जैसे कि भारत असभ्य एवं सपेरों का देश है, यहाँ पर बुराईयों की भरमार है, लोग जंगली एवं बुरी परम्पराओं को मानते है आदि – आदि।

स्वामी विवेकानन्द जी ने गरीबी को भोगा था। अतः वे जानते थे कि जब तक भारत में गरीबी का निर्मूलन नहीं होगा, तब तक भारत का सांस्कृतिक और भौतिक विकास सम्भव नहीं है एक बार वे गरीबी से तंग आकर अपने गुरु स्वामी रामकृष्ण परमहंस के पास पहुँचे एवं गरीबी से निजात दिलाने की बात कही। स्वामी रामकृष्ण ने उनसे कहा की जा माँ दक्षिणेश्वर काली से जाकर धन मांग ले। स्वामी विवेकानन्द जब मूर्ति के समक्ष गए तो उनकी समाधि लग गयी एवं उनके मुख से केवल एक वाक्य निकला –"माँ मुझे ज्ञान वैराग्य दो।" यह प्रक्रिया उन्होंने तीन बार दोहराई एवं तीनों बार उनके मुख से केवल वही वाक्य निकला कि माँ मुझे ज्ञान और वैराग्य दो। तब स्वामी रामकृष्ण ने उन्हें समझाया कि उनका जन्म भौतिक सुख सुविधा भोगने के लिए नहीं हुआ है, बल्कि गरीबों को ऊंचा उठाने के लिए हुआ है। उनका मानना था कि सदियों के शोषण के कारण गरीबों का मानव होने तक का एहसास हो चुकी है। वे स्वयं को जन्म से ही गुलाम समझते है। इसी कारण इस वर्ग में विश्वास एवं गौरव जाग्रत करने की महंती आवश्यकता है। उनका यह दृढ विश्वास था कि कमजोर व्यक्ति वह होता है, जो स्वयं को कमजोर समझता है और इसके विपरीत जो

व्यक्ति स्वयं को सशक्त समझता है वह पूरे विश्व के लिए अजेय हो जाता है। स्वामी विवेकानन्द का प्रत्येक भारतीय के लिए संदेश था- "जागो, उठो और तब तक प्रयत्न करो जब तक की लक्ष्य प्राप्त न हो।"

राष्ट्रीय एकता के बारे में स्वामी विवेकानन्द ने कहा है कि भले ही भारत में भाषायी, जातिवाद ऐतिहासिक एवं क्षेत्रीय विविधताएं है लेकिन इन विविधताओं को भारत की सांस्कृतिक एकता एक सूत्र में पिरोये हुए है। उन्होंने भारत के विभिन्न हिस्सों में जाकर अपने भाषणों में धार्मिक चेतना को जगाने एवं दलित, शोषित व महिलाओं को शिक्षित कर उन्हें राष्ट्र निर्माण में योगदान देने की बात कही है। स्वामी विवेकानन्द एक सच्चे राष्ट्रभक्त थे और उन्हें अपनी राष्ट्रीयता पर गर्व भी था। भारतीय संस्कृति एवं भारतीय धर्म के प्रति उनका गर्व एवं आदर शिकागो के धर्म संसद में उनके द्वारा दिए गए संभाषण से ज्ञात होता है, जब उन्होंने कहा था कि "मै एक ऐसे धर्म का अनुयायी होने में गर्व का अनुभव करता हूँ जिसने संसार को सहिष्णुता तथा सार्वभौम स्वीकृति दोनों की शिक्षा दी है। मुझे एक ऐसे देश का व्यक्ति होने का अभिमान है जिसने इस पृथ्वी के समस्त धर्मों और देशों के उत्पीड़ितों और शरणार्थियों को आश्रय दिया है।" और फिर इतिहास में जाते हुए उन्होंने कहा कि "मुझे आपको यह बतलाते हुए गर्व होता है कि हमने अपने वक्ष में यहूदियों के विशुद्धतम अविशिष्ट अंग को स्थान दिया जिन्होंने दक्षिण भारत आकर इसी वर्ष शरण ली थी जिस वर्ष उनका पवित्र मंदिर रोमन जाति के अत्याचार से धूल में मिल गया था। ऐसे धर्म का अनुयायी होने में मै गर्व अनुभव कारता हूँ। जिसने महान जरथ्रुष्ट जाति के अवशिष्ट अंश को शरण दी और जिसका पालन वह अब तक कर रहा है।"

स्वामी विवेकानन्द का शिक्षा में योगदान -

स्वामी विवेकानन्द न केवल एक सामाजिक सुधारक बल्कि एक शिक्षक भी थे। शैक्षिणिक विचारों में उनका योगदान सर्वोच्च महत्व का है यदि शिक्षा को सामाजिक परिवर्तन के सबसे शक्तिशाली साधन के रूप में देखा जाता है। स्वामी विवेकानन्द जी शिक्षा की अनुसार जीवन के सभी पहलुओं को शामिल करना चाहिए – सामग्री, शारीरिक, नैतिक, बौद्धिक, आध्यात्मिक और भावनात्मक, क्योंकि शिक्षा एक निरंतर प्रक्रिया है। उनके लिए शिक्षा पूर्णता की अभिव्यक्ति जो पहले से हो मनुष्य के रूप में परिभाषित करती है।

उन्होंने सुझाव दिया कि शिक्षा को मानव मस्तिष्क में सुधार करने का लक्ष्य रखना चाहिए यह मस्तिष्क में कुछ तथ्यों को भरने के लिए नहीं होना चाहिए। शिक्षा जीवन को तैयारी होनी चाहिए। उन्होंने एक बार कहा था कि शिक्षा आपके दिमाग में रखी गई जानकारी की मात्रा नहीं है और वहां दंगा चलाती है, जो आपके पूरे जीवन को अनदेखा करती है। हमारे पास जीवन- निर्माण, मानव निर्माण, चरित्र बनाने,विचारों का आकलन होना चाहिए। यदि आपने पाँच विचारों को समेट लिया है और उन्हें अपना जीवन और चरित्र बना दिया है, तो आपके पास किसी भी व्यक्ति की तुलना में अधिक शिक्षा है जो दिल से पूरी लाइब्रेरी प्राप्त कर चुकी है। अगर शिक्षा सूचना के समान थी, तो पुस्तकालय दुनिया में सबसे बड़ा ऋषि और ऋषि विश्वकोश होंगे।

विवेकानन्द जी ने प्रचार किया कि हिन्दू धर्म का सार आदि शंकराचार्य के अद्वैत वेदान्त दर्शन में सबसे अच्छा व्यक्त किया गया था और इस प्रकार आधुनिक शिक्षा प्रणाली के लिए स्वामी विवेकानन्द शिक्षण- शिक्षण प्रक्रिया में ध्यान और एकाग्रता पर अधिकतम जोर देना चाहते थे। सामान्य शिक्षा के अभ्यास में, क्योंकि यह योग के अभ्यास में है, पांच बुनियादी सिद्धांतों में जरुरी है- उद्देश्य, विधि, विषय, सिखाया और शिक्षक। उन्होंने इस तथ्य से आश्वस्त किया कि ध्यान और एकाग्रता का अभ्यास करके, मानव मस्तिष्क में सभी ज्ञान का भी अभ्यास किया जा सकता है। शिक्षा, राजनीति, अर्थशास्त्र और समाजशास्त्र को फिर से अभिविन्यास देकर, स्वामी विवेकानन्द समाज की बुराईयों को हटाना चाहते थे। इस परिवर्तन के लिए उन्होंने शिक्षा पर एक शक्तिशाली हथियार के रूप में तनाव डाला।

निष्कर्ष –

स्वामी विवेकानन्द जी का जीवनवृत्त ज्ञात करने से ज्ञात होता है कि स्वामी जी ने अपने गुरु की दी हुई शिक्षा का प्रचार पूरे विश्व में किया था। 31 मई 1893 को अमेरिका के शिकांगो में विश्व धर्म सम्मेलन में भारत के हिन्दू धर्म प्रतिनिधि के रूप में पहुँचे। स्वामी जी केवल संत ही नहीं बल्कि एक महान देशभक्त, वक्ता, विचारक, लेखक और मानव प्रेमी थे।

सन्दर्भ –

- आचार्य कृष्ण राम डॉ. एवं त्रिपाठी राम बाबू डॉ. "भारतीय दर्शन", विनोद पुस्तक मन्दिर आगरा, प्रथम संस्करण 1978
- पचौरी गिरीश: "शिक्षा के सामाजिक आधार", आर० लाल बुक डिपो, मेरठ 2008
- पचौरी गिरीश: "शिक्षा के महान शिक्षा आधार", आर० लाल बुक डिपो, मेरठ 2008
- भारत जागरण: "स्वामी विवेकानन्द", रामकृष्ण मिशन नई दिल्ली, 2011
- रोमां रोला : "विवेकानन्द की जीवनी" कोलकत्ता स्थित प्रकाशन विभाग द्वारा प्रकाशित, प्रथम संस्करण, अगस्त 1998
- विवेकानन्द स्वामी: "धर्म तत्व, रामकृष्ण आश्रम", धन्तोली, 1992